Volume - 5 | Issue - 9 | March - 2018

RESEARCH DIRECTION

UGC APPROVED

International Recognition Interdisciplinary Research Journal

Impact Factor 5.1723(UIF)

ISSN 2321-5488

"मन्नू भंडारी की कहानियों में कामकाजी औरतें"

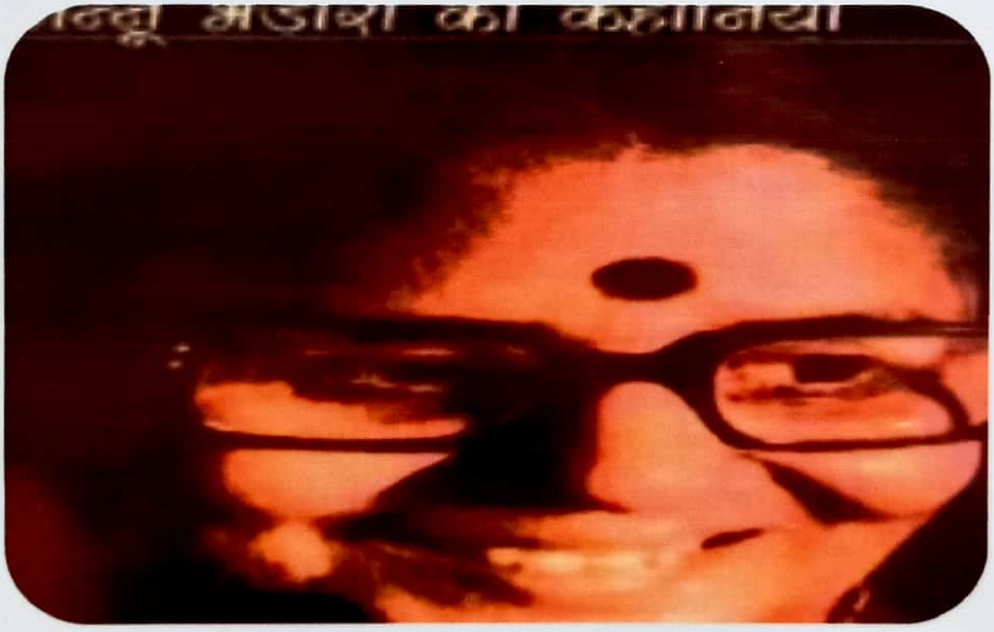

Research by

डॉ. नीता सिंह

डॉ. नीता सिंह

हिन्दी विभाग प्रमुख , श्री बिंझानी नगर महाविद्यालय, उमरेड रोड, नागपुर.

सारांश:-हमारी सामाजिक व्यवस्था में अर्थ, ज्ञान और षारीरिक बल ये मुख्य तीन कारण है जो पुरुष का वर्चस्व स्थापित करते हैं, जिनके परिणाम स्वरुप नारी धीर–धीरे पराधीन होती गई, उसका कार्यक्षेत्र घर और परिवार तक सीमित माना गया। समाज की समस्त मर्यादा, आदर्श एवं

Editor - In - Chief - S.P. Rajguru

Scanned with CamScanner

Research Directions
International Multidisciplinary Research Journal

ISSN NO:- 2321-5488 Impact Factor : 5.1723(UIF) Vol.- 5, Issue - 9, March - 2018

Sr. No	Title And Name Of The Author (S)	Page No
1	वर्तमान व्यवसाय प्रबंधन एवं श्रीमद्भगवद्गीता राहुल यादव	1
2	Use Of Radio Among Rural Women In Karnataka State: A Study Shobha Patil and P. G. Tadasad	5
3	Predictors Of Suicide Ideation Among Female Adolescents Ibadat Khan and Vandana Sharma	12
4	मन्नू भंडारी की कहानियों में कामकाजी औरतें डॉ. नीता सिंह	21
5	संतुलित क्षेत्रीय विकासातील पुणे जिल्हा नियोजनाच्या भूमिकेचे मूल्यमापन आप्पासो मच्छिंद्र काळेल , प्रा.डॉ.एस.डब्ल्यु.मिसाळ	24
6	वेब मीडिया माध्यम और आम–आदमी की आवाज : एक अध्ययन अमिता	29
7	Empowering Female Through Digital Technology: A Perspective Of Inclusion In India Firoz Alam	35
8	Factors Influencing Customer Trust In Mobile Banking Sapna Kumari and Dr. Shalini. P.	40

Scanned with CamScanner

9	Regional Diversities Of Personal Values: An Investigation Dr. Rebati Mani Samal and Dr. Jagabandhu Behera	46
10	Information Literacy Assessment: A Study Of Satish Pradhan Dnyanasadhana College Thane Mahesh M. Dalvi and Dr. Daya B. Dalve	55
11	A Study On The Use Of Online Public Access Catalogue (OPAC) By Students: A Case Study Of Kurukshetra University, Kurukshetra Anil	62
12	The Mystery Of Death In Graham Greene's *The Heart Of The Matter* Alka Saroha	71
13	Use Of Library Resources And Services In Ayurvedic Medical Colleges; A Survey With Special Reference To Costal Districts In Karnataka State: India. Rajashree R. Hadapad	75
14	भारत में महिला सुधार आन्दोलन :एक अध्ययन डॉ. योगेन्द्र तिवारी	83

Scanned with CamScanner

RESEARCH DIRECTIONS
ISSN: 2321-5488
IMPACT FACTOR : 5.1723(UIF)
VOLUME - 5 | ISSUE - 9 | MARCH - 2018

"मन्नू भंडारी की कहानियों में कामकाजी औरतें"

डॉ. नीता सिंह
हिन्दी विभाग प्रमुख , श्री बिंझानी नगर महाविद्यालय, उमरेड रोड, नागपुर.

प्रस्तावना :

हमारी सामाजिक व्यवस्था में अर्थ, ज्ञान और शारीरिक बल ये मुख्य तीन कारण है जो पुरुष का वर्चस्व स्थापित करते हैं, जिनके परिणाम स्वरुप नारी धीर–धीरे पराधीन होती गई, उसका कार्यक्षेत्र घर और परिवार तक सीमित माना गया। समाज की समस्त मर्यादा, आदर्श एवं नैतिकता उसी के लिए रह गयी। नारी के इतिहास पर नजर डालते है तो पाते है कि प्राचीन काल से स्फुतनिक युग तक नारी–पुरुष के जीवन को नकार दिया। उसके हिस्से में रह गया केवल समर्पण। "स्त्री की नियति थी पुरुष की अधीनता प्रकृति की भॉति उसका भी शोषण पुरुष ने किया। जिस सम्मान को वह भोगती थी, वह पुरुष का दिया हुआ था। पुरुष के हाथ प्रार्थना में देवी के पद पर आसीन कर उसकी स्तुति कर सकता था, तो देवी को छिन्न–छिन्न करने की ताकत भी उसके पास थी।" १ लेकिन स्वतंत्र भारत की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक थी नारी की चारदीवारी से मुक्ति। स्वतंत्रता के बाद भारत की बदलती हुई स्थितीयों में नारी केवल मॉ, प्रेयसी और पत्नी ही नहीं अपितु वह एक महत्वपूर्ण सामाजिक शक्ति के रुप में अपनी पहचान बना चुकी है। वह अब केवल रमणी या पत्नी ही नहीं, बल्कि घर के बाहर समाज का एक विशेष अंग है। इस युग की नारी ने शिक्षा ग्रहण करके सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में काफी तरक्की कर ली है। कार्यक्षेत्र में उपस्थित होकर अपने व्यक्तिव एवं अस्तित्व के प्रति जागरुक हुई है। स्वावलंबिनी होने के कारण वह यह अनुभव करती है कि उसे अधिकार चाहिए, निर्णय लेने का, राह चुनने का, संतान के भविष्य का। किन्तु पुरुष युगों से प्राप्त अपने अधिकारों को इतनी जल्दी नहीं छोड़ पाता है अत: दोनों के अधिकारों में टकराव शुरु हो जाता है। स्वतंत्र व्यक्तित्व की खोज में नारी को सबसे पहले परंपरागत मूल्यों के साथ जूझना पड़ता है। पूर्ण मुक्ति के लिए नारी प्रयत्न अवश्य करती है, परंतु पुराने संस्कारों के कारण उसे पूर्ण–मुक्ति नही मिलती। इस परम्परावादी समाज से निर्मित शिक्षित नारी के सामने नई समस्याएँ उभरने लगी है, उसे दो तरह की भूमिकाओं का सामना करना पड़ता है, एक पत्नी के रुप में तो दूसरी उपार्जन करने वाली नारी के रुप मे। आर्थिक स्वतंत्रता ने नारी के सम्मुख नई समस्याएँ उत्पन्न की जहॉ वह पहले अपने अंह की हत्या करके समझौता करने के लिए तैयार हो जाती थी, वही आज परिस्थितीयों को अपने अनुकूल बनाने के लिए वह संघर्ष करती है। वह पति कि सिर्फ भोग्या बनने को तैयार नहीं है। बल्कि वह उसकी मित्र, उसकी सहचर बनना चाहती है। महिला कथाकार नारी–पुरुष की समानता में विश्वास रखती है और मन्नू भंडारी भी नारी–पुरुष की समानता की अपवाद नहीं है। वह

Scanned with CamScanner

व्यर्थ के भावोच्छवास में नारी के ऑचल का दूध और ऑखों का पानी दिखाकर पाठकों की दया ने वसूलती। वह यथार्थ के धरातल पर नारी का नारी की दृष्टि से अंकन करती है। स्वयं लेखिका म भंडारी भी प्राध्यापिका रही है। इसलिए उन्होंने घर–परिवार और नौकरी के बीच छटपटाती नारी समस्याओं को अनुभव किया है। वह अपनी स्थिती के माध्यम से कामकाजी नारी की स्थिती के विषय लिखती हैं–"बेटी और घर (जिसकी पूरी जिम्मेदारी मुझ पर थी) के साथ नौकरी जो अपनी जिम्मेदारि को निभाने के लिए अनिवार्य थी। यही नौकरी पेशा नारी की स्थिती है।"[२]

"आपका बंटी" उपन्यास की शकुन एक मध्यवर्गीय समाज में पढी लिखी अपने पैरों पर ख नारी है जो त्याग करना नहीं चाहती। वह बदलते–सामाजिक परिदृश्यों का डटकर मुकाबला करते आगे बढ़ना चाहती है और पुरुष के समान समाज का उपयोगी अंग बनना चाहती है। भारतीय समाज परिवार की एक परंपरा है उस परंपरा को बनाये रखने की जिम्मेदारी नारी पर अधिक है। प्राध्यापि शकुन उन्हीं सब परम्पराओं से जूझती, जुडकर, टूटकर जुड़ने का प्रयत्न करती रहती है। शकुन पढ़ा–लिखा होना और कार्यक्षेत्र में उसकी स्थिती मजबूत होना, अजय के अंह को चोट पहुँचाता इसलिए अजय के साथ तनाव भरे माहौल में रोज–रोज अपने व्यक्तित्व को दबाते हुए चलना स्वीकार्य नहीं। अपने व्यक्तित्व को कायम रखने के लिए वह अजय से अलग हो जाती है। अगर शकु की जगह पर कोई अशिक्षित रुढ़िवादी संस्कारों से परिपूर्ण नारी होती तो कई बार अपमानजनक समझौ को सहन करते हुए भी दाम्पत्य की गाड़ी खींच ले जाती। लेकिन शकुन तो कॉलेज की प्रिसिंपल है उसकी कार्यक्षेत्र की स्थिति अच्छी है इसलिए समझौता करने का प्रश्न ही नहीं उठता। "समझौते का प्रयत भी दोनों में एक अंडरस्टैडिंग पैदा करने की इच्छा से नहीं होता था, वरन् एक–दूसरे को पराजित कर अपने अनुकूल बना लेने की आकांशा सें तर्को और बहस में दिन बितते थे और ठंडी लाशो की तर लेटे–लेटे दूसरे को दु:खी, बैचेन और छटपटाते–हुए देखने की आकांशा में रातें।" ३

अजय से शकुन का अलगाव उन संबंधों की रिक्तता को स्पष्ट करता है, जो प्रेम पर नहीं अं पर टिके होते है। शकुन ऐसे रिश्ते से मुक्त होती है तो मात्र व्यक्ति स्वातंत्र्य की चेतना के कारण ही लेकिन अलग होने के बाद शकुन की संतान बंटी भी उसकी स्वतंत्रता में बाधा डालने लगती है। इ परिस्थिती में शकुन डॉ. जोशी से विवाह करने और संतान के प्रति ईमानदार रहने के संदर्भ में कहीं भ तालमेल नहीं बिठा पाती है। परिणाम स्वरुप संतान बंटी के हालत त्रिशंकु जैसे हो जाते है। शिक्षि नारी–पुरुष के संबंधों की स्थिरता पर इस समय एक प्रश्न चिन्ह लग गया है, जहॉ नारी की कार्यक्षेत्र स्थिति पुरुष के समकक्ष या उससे उत्तम होती है, तो वहॉ पुरुष की अंह वृत्ति उसे स्वीकार नहीं पाती क्योंकि प्राचीन काल से ही पुरुष–सत्तात्मक समाज की मानसिकता नारी तेजस्विता को सहजता स्वीकार नहीं कर पायी है, फलस्वरुप दाम्पत्य जीवन की दीवारें धीरे–धीरे ढहने लगती हैं। शकुन क कार्यक्षेत्र में स्थिती का मजबूत होना ही पति–पत्नि के बीच होने वाले अलगाँव का प्रमुख कारण है। अग शकुन आर्थिक रुप से मजबूत न होकर अजय पर आश्रित होती तो हो सकता था कि तलाक न होत और संतान बंटी को माता–पिता दोनों का प्यार मिलता। कार्यक्षेत्र में नारी की स्थिति ने विशेषक मध्यमवर्ग के मानसिक ढॉचे को हिला दिया है। यह वर्ग एक ओर तो चाहता है कि नारी नौकरी करे घ की देखभाल करें, किन्तु दूसरी और इससे अपना आत्मसम्मान आहत पाता है। इन्ही समस्याओं से जूझत है "एक इंच मुस्कान" उपन्यास की रंजना। रंजना और अमर के संबंधों में तनाव कारण है रंजना क कार्यक्षेत्र में स्थिती और अमर का लेखकीय व्यक्तित्व। रंजना अध्यापिका है, वह अध्यापकीय जीवन पहल अपनी इच्छा से स्वीकार करती है, लेकिन विवाह के बाद परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने के लि अध्यापन कार्य करना उसकी मजबूरी बन जाता है। कार्यक्षेत्र में स्थिती के कारण उसका विवाहित जीव सुखी नहीं रहता है। परिवार की सुख–शांति के लिए रंजना हर संभव कोशिश करती है। इस कोशिश वह अपनी संतान को भी जन्म लेने से पहले ही त्याग देती है। उसके सारे प्रयास निष्फल ही रहते है पुरुष प्रधान समाज नारी के इस सराहनीय रुप को शंका की दृष्टि से देखता है। अमर रंजना से कहत

Scanned with CamScanner

है—तुम कमाओगी, काम करोगी और मैं बैठा—बैठा खाऊँगा। इसे मेरा अंह कैसे स्वीकार नहीं कर पाता, बात—बात पर अर्थ मूल्य की दृष्टि से स्वयं को अपदस्थ मानकर हीन भावना से ग्रस्त ही पाता है। एक दिन अमर कहानी के माध्यम से रंजना को भारतीय पत्नी की विशेषताओं को समझाता है, तो रंजना भी अमर की मनोदशा को समझते हुए उसे चड्ढा और उसकी कमाने वाली पत्नी रतन की कहानी सुनाकर एक—दूसरे के कार्य में सहयोग करने वाले पति—पत्नि के गुणों का वर्णन करती है, साथ ही पति के सहयोग पर विशेष बल देती है। कहानी सुनकर अमर को विश्वास हो जाता है कि यह कहानी खास मुझे केंद्र में रखकर बनायी गई है। रंजना के कॉलेज चले जाने के बाद अमर सोचता है—"मेरा काम घर पर बैठकर करने का है और रंजना का स्कूल में जाकर पढाने का बात इतनी ही नहीं है। इसकी जड़े परिणतियों और भी गहराई में हैं — मेरी हैसियत पति की है और कार्य पत्नी का है" ४

इस उदाहरण से यह बात स्पष्ट होती है कि अमर के अंदर एक पुरानी रूढीवादी सोच वाला पति जिन्दा है जो पत्नी रंजना की कार्यक्षेत्र में स्थिती को सहन नहीं कर पाता। बार—बार उसका अंह आहत होता है। अमर का यही अंह उसकी यही सोच उसके और रंजना के संबंधों में कड़वाहट लाती है। रंजना आधुनिक नारी है जो अपने व्यक्तित्व के प्रति सजग एवं संवेदनशील है। पारिवारीक जीवन की जिम्मेदारियों को वह पूरी ईमानदारी के साथ निभाना चाहती है, पर इसके लिए पुरुष का साथ उसका सहयोग भी जरुरी है। जो रंजना को नहीं मिलता इसलिए रंजना और अमर के मध्य टकराव रहता है। परिणाम स्वरुप दोनों में अलगाव हो जाता है। पारिवारीक जीवन तथा संतान के प्रति आकर्षक ये सब ऐसे रुप है, जिनका संबंध अध्यापिका रंजना और प्राध्यापिका शकुन दोनों से है। समस्याएँ समान प्रतीत होने पर भी उनका निदान दोनों स्थितियों में भिन्न—भिन्न है। जहाँ अध्यापिका रंजना अपने संबंध को निभाने के लिए अपनी इच्छाओं को दबा देती है वही प्राध्यापिका शकुन अपने वैचारिक तर्क द्वारा अपने संबंध को तोडकर अंर्तद्वंद में उलझती रहती है। आज नारी की स्थिती में बदलाव आया है। शिक्षा के परिणाम स्वरुप नारी की छुपी प्रतिभा उभरकर सामने आयी है। उसके कार्यक्षेत्र का दायरा बढ़ा है। अब नारी में केवल पारिवारिक जिम्मेंदारियों को वहन करने की क्षमता नहीं है वरन् वह घर और बाहर की दोहरी जिम्मेंदारियों को संभालने में सक्षम है। आवश्यकता है उसे अवसर प्रदान करने की।

संदर्भ ग्रंथ सूची :—

१) सीमोन द बोउवार (अनुवाद डॉ. प्रभ खेतान) "स्त्री: उपेक्षिता" पृष्ठ क्रमांक—५५
२) मन्नू भंडारी, 'एक कहानी यह भी' — पृष्ठ क्रमांक — १३
३) मन्नू भंडारी, 'आपका बंटी' — पृष्ठ क्रमांक — ३७
४) मन्नू भंडारी, राजेन्द्र यादव — 'एक इंच मुस्कान' — पृष्ठ क्रमांक — ४९—५०
५) मन्नू भंडारी, राजेन्द्र यादव — 'एक इंच मुस्कान' — पृष्ठ क्रमांक — ४९

डॉ. नीता सिंह
हिन्दी विभाग प्रमुख , श्री बिंझानी नगर महाविद्यालय, उमरेड रोड, नागपुर.

Scanned with CamScanner